

## “जल स्तुति”

— डॉ. योगेन्द्र नाथ शर्मा ‘अरुण’, डी. लिट्.

जग—जीवन का आधार है जल !

जल बिना नहीं जीवन—संबल !!

हैं रूप अनेक यहाँ जल के,  
द्रव रूप में जीवन सा बरसे !  
हिम रूप बना जल जमने से,  
बन गया वाष्प जल जलने से !!

जलता है जल जब, वाष्प बने,  
ठंडक जो मिले, बरसात बने !  
बढ़ जाए ठण्ड जब और अधिक,  
बरसात स्वयं हिमपात बने !!

करता है कैसे खेल यह जल !

जग—जीवन का आधार है जल !

फिर ताप बढ़ा गर्मी आई,  
हिम से जलधार बनी भाई !  
फिर धिरी घटा, चमकी चपला,  
रिमझिम—रिमझिम वर्षा आई !!

जल प्यास बुझाने जब आया,  
धरती का कण—कण हर्षाया !  
धरती के भीतर पहुँचा जल,  
अंकुर बन जीवन मुसकाया !!

यों जीवन बन जाता है जल !

जल बिना नहीं जीवन—संबल !!

जल फेला धरती के कण में,  
रुक गया शिलाओं बीच कहीं !  
फिर निकला जल निर्झर बनकर,  
पाताल फोड़ कर कुँआ कहीं !!

जब धरती रसमय हो आई,  
जल ऊपर ही तब बह निकला !  
एकत्र हुआ फिर यहाँ—वहाँ,  
सरिताओं, झीलों में जल बदला !!

नित रूप बदलता है यूँ जल !

जग—जीवन का आधार है जल !!

नदियों पर बाँध बांध कर फिर,  
मानव ने जल को रोक लिया !  
जग—जीवन हो मंगलकारी,  
यों जल का नित उपयोग किया !!

पन चक्की चलीं इसी जल से,  
बिजली घर—घर में पहुँचाई !  
बुद्धि से जल बन गया स्वर्ण,  
उद्योगों में नव गति आई !!

बहुमुखी विकास करता है जल !  
जल बिना नहीं जीवन—संबल !!

खेतों को हरियाली देकर,  
जल ने ही जग को प्राण दिए !  
नदियों को गति दी है जल ने,  
तीर्थों को पावन नाम दिए !!

नदियों से विद्युत—शक्ति मिली,  
जल से ही खुशहाली आई !  
भारी लकड़ी के लट्ठों को,  
जल—धार बहा कर ले आई !!

यों शक्ति बना है शीतल जल !  
जग—जीवन का आधार है जल !!

जल—तल नीचा, तो फसल सूखी,  
ऊँचा तल हुआ, तो फसल सड़ी !  
जल का उपयोग किया ढंग से,  
मानव को मिली समृद्धि बड़ी !!

नल बना—बना कर शहरों में,  
मानव की प्यास बुझाता जल !  
रोगों से मुक्ति दिलाने का,  
सुन्दर साधन बन जाता जल !!

ईश्वर का है वरदान यह जल !  
जल बिना नहीं जीवन—संबल !!

जल का रिश्ता तो मानव से,  
उल्टे अनुपात में होता है !  
जनसंख्या ज्यों—ज्यों बढ़ती है,  
जल का अभाव त्यों होता है !!

जल का उपयोग करे मानव,  
तो जीवन में रसधार बहे !

जल को बेकार गंवाया तो,  
मानव सचमुच लाचार रहे !!

सच्ची प्रगति का सार है जल !  
जग—जीवन का आधार है जल !!

जल को नहीं व्यर्थ करे कोई,  
जल का संरक्षण धर्म बने !  
जल की महिमा समझाना ही,  
मानव का सुन्दर कर्म बने !!

जल है पूजा, जल है भक्ति,  
जल ईश्वर का वरदान सदा !  
मानव—जीवन का मूल तत्व,  
जल है शक्ति का नाम सदा !!

धरती का प्राणाधार है जल !  
जल बिना नहीं जीवन—संबल !!

मानव—जीवन में इस जल का,  
ऊँचा ही रहा स्थान सदा !  
हर पल, हर क्षण, इस जल से ही,  
मानव पाता सम्मान सदा !!

इस जल की पूजा करनी है,  
इस जल से जीवन पाना है !  
शक्ति के स्रोत 'ब्रह्म—जल' से,  
पीड़ित को त्राण दिलाना है !!

परमेश्वर का ही सार है जल !  
जल बिना नहीं जीवन—संबल !!

(साभार: राष्ट्रीय जल विज्ञान संस्थान)